© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में वृद्धों की उपेक्षा

विमलेन्दु भूषण द्विवेदी
शोध छात्र
म0गॉ0चि0ग्रा0वि0वि0
चित्रकूट सतना म0प्र0

बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी चित्रा मुद्गल हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित महिला कथाकार हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षक मुद्गल की रचनाओं में समाज की हर छोटी–बड़ी विसंगतियां सहजता से लक्षित हो जाती है। इन्होंने अपने साहित्य में जो कुछ अंकित किया वह कल्पना मात्र नहीं है, उसने सहभागी होकर इन समस्याओं को देखा तथा अनुभव किया है। इस प्रकार दूसरे की व्यथा को अपनी व्यथा समझकर ही चित्रा मुद्गल अपना लेखन करती हैं। संसार में मानव सबसे संवेदनशील प्राणी है। यही मानव अपने जीवन के वृद्धावस्था में आकर एक अजीब सी उपेक्षा की जिन्दगी जीने लगता है। यह समाज से कटा हुआ अकेलापन की कुंठा से ग्रस्त हो जाता है। अकेलापन, प्रेम का अभाव, आर्थिक तंगी, अपनों द्वारा उपेक्षा आदि कारक मिलकर वृद्धों को उपेक्षित की श्रेणी में लाकर झोंक देते हैं। चित्रा मुद्गल ने इस अनछुए बिसंगति को अपने साहित्य में स्थान दिया।

यह विधि का विधान है कि मनुष्य अपने जीवन काल में तीन चरणों से होकर गुजरता है– बचपन, यौवन और बुढ़ापा। जिस उम्र में मानव जीवन काल के समीप हो जाता है उस अवस्था को वृद्धावस्था कहा गया है। वृद्धावस्था एक प्राकृतिक व स्वाभाविक रूप से धीरे–धीरे आने वाली अवस्था है। बचपन और यौवन तो हवा की तरह उड़ जाते हैं पर बुढ़ापा मनुष्य के जीवन में स्थायी जगह बना लेता है। अगर किसी से पूछा जाय कि आप यौवन और बुढ़ापा इन दोनों में से किसका चुनाव करेंगे तो वह आपको मूर्ख समझेगा। इस धरती पर ऐसा कोई नहीं है जो यौवन को न पसंद कर बूढ़ा होना पसंद करता हो। वस्तुतः बुढ़ापा और जवानी एक–दूसरे के प्रतिद्वंदी हैं।

बुजुर्ग को ज्ञान और अनुभव का भंडार मानने वाली भारतीय संस्कृति बुजुर्गों के प्रति अपने कर्त्तव्य से पलायन कर गयी है। पिछली पीढ़ियाँ बुढ़ापे को पूरी मर्यादा से स्वीकार कर लेती थी। लेकिन वर्तमान सामाजिक जीवन–शैली में वृद्धों के कष्टों को देखकर ऐसा लगता है मानो बुढ़ापा कोई अभिशाप हो और यौवन एक बहुत बड़ी उपलब्धि। चित्रा मुद्गल जैसी सशक्त महिला कथाकार ने वृद्धों के सम्मान की लड़ाई लड़ते हुए अपनी लेखनी चलाई।

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की केन्द्रीय संस्था और परिवार का प्रमुख स्वरूप रहा है जो आधुनिकीकरण और संचार क्रांति के वर्तमान दौर में परिवर्तन की ओर क्रियाशील है। आज विघटित परिवारों की संख्या बढ़ी है अर्थात पुत्र अपने माता–पिता से अलग रहना पसंद करते हैं। चित्रा मुद्गल के 'गिलिगडु' उपन्यास में टूटते हुए संयुक्त परिवार का वृद्धों पर पड़ने वाले दुष्परिणामों का करूणाजनक चित्रण किया गया है। बाबू जसवंत सिंह अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बेटे नरेन्द्र के पास दिल्ली चले आते हैं। परिवार में उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है। बाबू जसवंत सिंह अपनी तुलना टामी से करने लगते हैं– ''इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं– एक टामी, दूसरा अवकाश प्राप्त सिविल इंजिनियर जसवंत सिंह।'' (1) इसी प्रकार कर्नल साहब की भी कथा है जो इससे कहीं ज्यादा करूण है। पत्नी की मौत के बाद कर्नल स्वामी अकेले हो गये थे। उनके

तीनों बेटे नये–नये शहरों में बस जाते हैं। धन की आकांक्षा से खुद के बेटे ने कर्नल साहब को पीटकर मौत की नींद सुला देता है। कर्नल साहब की पड़ोसन कहती है– ''ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं।''(2)

जो माता–पिता स्वयं कष्ट उठाकर अपने सन्तानों को हर सम्भव सुख–सुविधा उपलब्ध कराते हैं उन बच्चों के घर में पिता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। बाबू जसवंत सिंह घर में अपरिचितों की तरह अनुभव करते हैं तथा उन्हें किसी परिचित को कॉफी पीने का न्यौता देने तक का साहस नहीं होता– ''गेट के निकट पहुँचकर बाबू जसवंत सिंह की इच्छा हुई कि अजनबी को घर चलकर एक कॉफी पीने का न्यौता दें। लेकिन न्यौता देने का साहस नहीं जुटा।.....कानपुर से दिल्ली आये हुए उन्हें अरसा हो गया। घर की चौखट में दाखिल होते ही वे स्वयं को अपरिचितों की भांति प्रवेश करता हुआ अनुभव करते हैं। कैसे कहें!''(3)
बच्चों द्वारा लाख सताये जाने पर भी माता–पिता समाज में अपने तथा बच्चों की बेइज्जती की डर से अपनी पीड़ा को उजागर नहीं होने देते। कर्नल साहब पीड़ा को मन में छीपाकर अपने भरे पूरे घर का झूठा बयान कर इस एकांत जीवन के दर्द को छिपाते हैं। ''पत्नी नहीं है। उन्हें गए हुए बरसों बीत गए। तीन बेटे हैं, तीन बहुए हैं।..... पूरा परिवार साथ ही रहता है। अपना–अपना फ्लैट बना लेने के बावजूद बच्चे उन्हें छोड़ अलग नहीं रहना चाहते। अपनी अम्मा के जाने के बाद से तो उनका विशेष खयाल रखते हैं। तय है कि उनके न रहने के बाद भी बच्चे साथ ही मिलजुलकर रहना चाहते हैं। इनकी मान्यता है कि साथ रहने में बरक्कत है।.....दुर्गम मोर्चों पर तैनाती होने के चलते परिवार का सुख अप्पू को ढुकड़ों में ही मिला। बच्चे उनकी इस पीड़ा को समझते हैं और चाहते हैं कि अप्पू को भरपूर पारिवारिक सुख मिले।''(4)

दादा जसवंत सिंह की इच्छा होती है कि वे भी अपने पोतों के साथ खेलें, समय बिताये लेकिन पोता के पास समय नहीं है वह गिफ्ट लेने के लिए दादा के साथ पालिका बाजार भी नहीं जाता और कहता है कि ''पढ़ना होता है न.....।''(5) मलय अपने जन्मदिन की पार्टी में किसी बूढ़े को शामिल करके पार्टी को बोरिंग नहीं करने देना चाहता– '' न, न दादू! अपने साथ हम किसी भी बड़े को नहीं ले जाएंगे– पार्टी बोरिंग हो जाएगी।''(6)

बूढ़े ससुर को बिना अपराध के अपराधी करार कर अश्लील आरोप लगाते हुए ऐसे शब्द निकाल बहू को शर्म भी नहीं आई– ''आखिर बाबू जी इस सभ्रांत सोसाइटी में उनकी इज्जत खाक में मिलाने पर क्यों उतारू है? अपनी उम्र का लिहाज किया होता। अभी भी जवानी का जोश बाकी हो तो दिक्कत कैसी? चले जाया करें रेडलाइट एरिया। कौन पेंशन कम मिलती है उन्हें जो उनकी मौजमस्ती में हाथ बंधे हो? कम से कम अड़ोस–पड़ोस की किशोरियों पर तो नजर न डालें। मुंह दिखाने लायक रखें उन्हें सोसाइटी में।''(7)

समाज में तेजी के साथ हो रहे मूल्यों में परिवर्तन ने नई व पुरानी पीढ़ी के बीच एक गहरा गैप बनाता जा रहा है। पुरानी पीढ़ी जहां नये मूल्यों को आत्मसात नहीं कर पा रही है, वहीं नयी पीढ़ी की स्थिति त्रिशंकू की भांति हो गई है। वह न तो नये मूल्यों को पूरी तरह स्वीकार कर पा रहा है और न ही पुराने मूल्यों में रूचि रख रहा है। इसका खामियाजा वृद्ध माता–पिता को भुगतना पड़ रहा है। ''दशरथ का वनवास'' दो पीढ़ियों के समानान्तर मूल्य दृष्टि की कहानी है। बचपन में रमानाथ के साथ पिता द्वारा किया गया आतंक बढ़ती उम्र के साथ पिता के प्रति नफरत में परिवर्तित हो जाता है जबकि पिता का यह आतंक रमानाथ के सुन्दर भविष्य बनाने की कड़ी थी। यहां तक कि पिता की मृत्यु के समय भी इकलौता बेटा रमानाथ पिता से मिलने नहीं जाता और कहता है–''मरे हुए संबंधों को वह मात्र लोकलाज के लिए नहीं जी सकता, इसीलिए इन ढकोसलों में भी खुद को शरीक नहीं कर पा रहा।''(8) किन्तु पार्सल में आई साइकिल और पिता जी का खत रमानाथ को पश्चाताप करने पर मजबूर कर देता है। ''चि0 बबुन! सोचा था, तुम दफ्तर जाने लगोगे तब तुम्हें यह साइकिल भेंट करूंगा। तुम दफ्तर जाने लगे, मगर तुमसे भेट नहीं हो पाई। तुम्हारी अमानत अब नहीं संभाल पा रहा, तुम्हारे पास भिजवा रहा हूँ.....।(9) पुरानी पीढ़ी अपने संतान के साथ सख्ती से पेश आती थी और आज की पीढ़ी अपने संतान के साथ मित्रवत। इसी व्यवहार की समीक्षा कर आज की पीढ़ी बुजुर्गों को दोषी मानकर प्रतिशोध लेने का प्रयास करते दिखाई देते हैं।

भारतीय इतिहास में श्रवण कुमार एवं भगवान राम जैसे पुत्रों ने भी जन्म लिया है। भगवान राम माँ की आज्ञा पर राजमहल छोड़ वनवास के लिए निकल पड़ते हैं तथा श्रवण कुमार अपना सारा जीवन माता–पिता की सेवा में न्यौछावर कर देते हैं। उसी इतिहास की आधुनिक पीढ़ी के पास बूढ़े माता–पिता की सेवा व

देख–रेख के लिए समय नहीं है। समय से भी बड़ी वस्तु श्रद्धा होती है। यदि श्रद्धा है तो समय अपने आप ही निकल आता है। वो वृद्ध माता–पिता से छुटकारा पाने का एक विकल्प वृद्धाश्रम को तलाश लेते हैं। बूढ़े माता–पिता के लिए यह वृद्धाश्रम किसी अनाथाश्रम जैसा ही लगता है।

चित्रा मुद्गल ने 'गेद' नामक कहानी में वृद्धाश्रम में रह रहे वृद्धों की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है। रिटायर्ड सचदेवा जी का पुत्र विनय पिता को वृद्धाश्रम छोड़ खुद इंग्लैण्ड में अपने बीबी बच्चों के साथ रम गया है। विनय शुरू में तो पैसे भेजता था लेकिन धीरे–धीरे बन्द कर देता है। सचदेवा जी अपने पेंशन से खुद की जरूरतों को पूरी नहीं कर पा रहे हैं। लंदन में रहने वाले अपने बेटे को वृद्धाश्रम से वह प्रतिदिन पत्र लिखते हैं कि अभी तक उन्हें पैसे नहीं मिले हैं। पत्र के जवाब में विनय फोन करके कभी आश्रमवालों की मदद से इलाज करवाने की बात तो कभी मनीष के हाथों पैसा भिजवाने की झूठी आश्वासन तो कभी काम की व्यस्तता का बहाना लेता है।''सात–आठ महीने से ऊपर हो रहे होंगे। विनय को अपनी परेशानी लिख भेजी थी उन्होंने। जवाब में फोन खटका दिया– श्रवण–यंत्र के लिए वह उनके नाम रूपया भेज रहा है। आश्रमवालों की सहायता से अपना इलाज करवा लें। बड़े दिनों तक वे अपने नाम आने वाले रूपयों का इंतजार करते रहे। गुस्से में आकर उन्होंने उसे एक और खत लिखा। जवाब में उसका एक और फोन आया– एक पेचींदा काम में उलझा हुआ था, इसलिए उन्हें रूपये नहीं भेज पाया।''[10]

वृद्धों की यह विशेषता होती है कि वे प्रेम के भूखे होते हैं। अपनों द्वारा पीड़ित बुजुर्गों को बाहर के किसी भी बड़े या बच्चों से थोड़ा सा भी सहानुभूति व प्रेम मिल जाता है तो ये बुजुर्ग अपना सर्वस्व समर्पण करने को तैयार हो जाते हैं।'गेंद' कहानी के सचदेवा की मित्रता घर पर बंद बालक बिल्लू से हो जाती है। सचदेवा जी उस बच्चे से अपने लिए दादा जी पुकारने को कहते हैं। सचदेवा जी शवयात्रा में जाने के बजाय बिल्लू के लिए बैट–बॉल लेने उतर जाते हैं।''आश्रम के बाहर होते ही बस एंबुलेंस के पीछे बाईं ओर मुड़ने लगी कि अचानक सचदेवा जी भड़भड़ाए से अपनी सीट से उठ खड़े हुए। हाथ उठा ड्राइवर को पुकारते हुए कहने लगे– ड्राइवर साहब, जरा गाड़ी रोकना, भैया! रोकना तो.....।[11]

चित्रा मुद्गल अपने साहित्य के माध्यम से केवल समस्या को ही चिन्हित नहीं करती बल्कि उसके समाधान को खोजकर अपने पात्रों के माध्यम से बड़े ही रोचक तरीके से समाज के सामने प्रस्तुत करती हैं। मुद्गल जी वृद्धों को सन्तानश्रयी बनने की बजाय स्वावलंबी बनकर आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती हैं। 'गिलिगडु' उपन्यास के कर्नल स्वामी का चरित्र निश्चय ही प्रेरणादायी है। कर्नल स्वामी के जीवन की सच्चाई व अन्त समय में उनके पुत्र द्वारा ही पीटकर निर्मम हत्या की बात सुनकर बाबू जसवंत सिंह का दिल द्रवित हो उठता है। जिसके परिणामस्वरूप वे अपनी सारी सम्पत्ति ही नहीं अपितु अपने दाह संस्कार का अधिकार भी सुनगुनिया और उसकी सन्तानों को देने का निश्चय कर लेते हैं। साथ ही वह सुनगुनिया द्वारा दिये गये अपने उनके रिश्ते के किसी भी नाम को स्वीकारने के लिए तैयार हैं।

हमारे देश में बुजुर्गों की दयनीय दशा को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर केन्द्र सरकार ने वृद्ध व्यक्तियों एवं संस्थानों को 'वयोश्रेष्ठ सम्मान' दिया। इस प्रकार के राष्ट्रीय पुरस्कारों का प्रयोजन वरिष्ठ नागरिकों के प्रति सरकार की चिन्ताओं एवं समाज में उनके न्यायसंगत स्थान को सुदृढ़ करने के लिए उनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। विकसित देशों में वृद्धों की देखभाल राज्य की जिम्मेदारी होती है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा सन् 1991 में वृद्धजनों के लिए संयुक्त राष्ट्र की नीति अपनायी गई। 1992 में महासभा द्वारा वृद्धावस्था पर एक घोषणा पत्र एवं सन् 2001 के लिए वृद्धावस्था पर वैश्विक लक्ष्य जैसे कार्यक्रम बनाये गये। भारत भी अब इस रास्ते पर चलता दिख रहा है। एक अध्ययन से पता चला था कि 60 से ज्यादा उम्र के करीब तीन फीसदी लोग अकेले रह रहे हैं। उस अध्ययन के मुताबिक अपने जीवन साथी के साथ रहने वाले बुजुर्गों की संख्या सिर्फ 9.3 फीसद ही थी, जबकि अपने बच्चों या परिवार के साथ कुल बुजुर्गों का 35.6 प्रतिशत रह रहा था। सामाजिक संगठनों का मानना है कि इस समस्या के चलते करीब तीन लाख सीनियर हाउसिंग यूनिट्स की देश में जरूरत है। 2011 के जनगणना के आकड़ों के अनुसार, भारत में वरिष्ठ नागरिकों की आबादी 10.38 करोड़ है। वरिष्ठ नागरिकों की आबादी का 70% से अधिक देश के ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। वरिष्ठ नागरिकों का एक बड़ा हिस्सा 5.2 प्रतिशत बुढ़ापे से संबंधित किसी न किसी प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त हैं। पिछले एक दशक में भारत में वयोवृद्ध लोगों की आबादी 39.3% की दर से बढ़ी है।

आगे आने वाले दशकों में इसके 45–50 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है।[12] सामजिक सुरक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। वृद्धजनों के लिए राष्ट्रीय नीति की घोषणा जनवरी 1999 में की गई। इसका मुख्य उद्देश्य–''व्यक्ति को स्वयं अपनी और अपने जीवन साथी की वृद्धावस्था की तैयारी के लिए प्रोत्साहित करना, परिवारों को अपने बृजुर्ग सदस्यों की देखभाल के लिए प्रोत्साहित करना, स्वयंसेवी और गैर सरकारी संगठनों को परिवार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली देखभाल वृद्धि करने में सक्षम बनाना और इसका समर्थन करना, असहाय वृद्धजनों के स्वास्थ्य की देखभाल और संरक्षण वृद्धों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना, वृद्धों के लिए सेवा और संरक्षण देने वाले लोगों को अनुसंधान तथा प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध और वृद्धि में ऐसी जागरूकता पैदा करना जिससे वे स्वयं आत्मनिर्भर बन सकें।''[13] इसके अतिरिक्त भारतीय दंड संहिता की धारा 125 के अतंर्गत मजिस्ट्रेट किसी माता–पिता की सन्तान को माता–पिता का अनुरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत अपने वृद्ध माता–पिता का जीवन निर्वाह करने का आदेश दे सकता है। साथ ही घरेलू हिंसा अधिनियम भी माता–पिता को किसी भी प्रकार के दुर्व्यवहार से राहत प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है। सामाजिक न्याय एवं सशक्तीकरण मंत्रालय द्वारा वृद्ध व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय परिषद (एन0सी0ओ0पी0) का पुनर्गठन किया गया, जो वृद्धों के बारे में नीतियां और कार्यक्रम तैयार करने में सरकार को सलाह और सहायता देती है।

वृद्धों के कल्याण हेतु सरकारी स्तर पर इतने सुदृढ़ नीतियां होने के बावजूद वृद्ध उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं। इसके लिए वृद्धों को अपने अधिकार के प्रति जागरूक व युवाओं को अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना पड़ेगा। कोई भी सरकारी अधिनियम बिना समाज के सकारात्मक सहयोग के व्यवहारिक स्तर पर सफल नहीं हो पाता इसलिए वृद्धों के कल्याण हेतु समाज के सकारात्मक सहयोग की आवश्यकता है। चित्रा मुद्गल जैसी प्रतिष्ठित लेखिका ने अपनी रचनाओं के माध्यम से वृद्ध वर्ग को सन्तान–मोह को त्याग स्वावलंबी व आत्मनिर्भर बनने की और युवा वर्ग को कर्त्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणा देती हैं। मुद्गल की रचनाओं को पढ़ने के बाद पाठक के अन्तःमन में वृद्धों के प्रति एक आत्मीयता व सहयोगात्मक भावना उमड़ने–घुमड़ने लगती है।

संदर्भ सूचीः–

1– चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014,पृ0 96
2– वही, पृ0 138
3– वही, पृ0 14
4– वही, पृ0 24
5– वही, पृ0 34
6– वही, पृ0 33
7– वही, पृ0 59
8– चित्रा मुद्गल, आदि–अनादि–1, सामयिक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2009,पृ0 26
9– वही, पृ0 27
10– चित्रा मुद्गल,आदि–अनादि–3,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 214
11– वही, पृ0 228
12– योजना, प्रकाशन विभाग, अंक 07, जुलाई 2017, नई दिल्ली ,पृ0 67–68
13– भारत 2016,प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार,पृ0 821